Prabhnoor Kaur
VI-A

Date

बाल विवाह

(1) कैसा अन्याय ये नियम बना दिया,
कोमल फूलों को रिवाजों तले मुरझा दिया
अच्छा बुरा मालूम नही,
अपना पराया मालूम नही ॥
ऐसे नाजुक कन्धों पर,
शादी का बोझ डाल दिया ॥

(2) अभी खेलने के दिन इसके,
हुआ न बचपन पुरा है।
मत समझो अपने को समझदार,
छोटे बच्चे का करके बाल विवाह ॥

(3) जुल्म इतना किया, कि वह रो भी न सकी,
अपने पराये लोगो के बीच भेद भी न कर सकी
न गलत पता,
न सही पता,
तो क्यो किया बाल विवाह, बाल विवाह, बालविवाह

Date

बाल विवाह

(1) करो न जुल्म मुझ पर,
कर के मेरा बाल विवाह।
छोटी सी उमर में
खो न जाऐ बचपन मेरा ॥

(2) पिता की परी, माँ की सखी,
क्यों कहते हैं तू पराए घर चली।
अभी तो मुझे पढ़ना है,
न करना चूल्हा, चौंका, झाड़ू, पोछा।
मत करो मेरा बाल विवाह,
मैं करूंगी रोशन जाँहा ॥

Prabhnoor Kaur
VI^th A